RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | SEPT 2011 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

टैक्निया में ओरिएन्टेशन कार्यक्रम

बीजेएमसी के विद्यार्थियों ने की शिरकत

टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ रोहिणी, दिल्ली में बीजेएमसी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ओरिएन्टेशन कार्यक्रम टैक्निया ऑडीटोरियम में आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य नए विद्यार्थियों को उनके विषयों के साथ इंस्टीट्यूट व इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के नियमों को बताना था।

दिन का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इसके बाद टैक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता द्वारा लिखी गई पुस्तक "आत्मविश्वास – सफलता का आधार" का विमोचन किया गया। सभी विद्यार्थियों को यह पुस्तक निःशुल्क वितरित की गई। उन्होंने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के सम्मिश्रण पर जोर देते हुए कहा कि सफलता के लिए सतत् कड़ी मेहनत, लग्नशीलता एवं आत्मविश्वास जरूरी है।

डा0 अजय प्रताप सिंह ने टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज की प्रजेन्टेशन प्रस्तुत की। टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डा0 अजय कुमार राठौड़ ने विद्यार्थियों को आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मीडिया और पत्रकारिता विषय के महत्त्व के बारे में बताया। डा0 निर्मल सिंह ने विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद मौजूद नौकरी के अवसरों के बारे में जानकारी दी। बीजेएमसी के विभागाध्यक्ष डा0 भरत कुमार ने विद्यार्थियों के व्यवसायिक प्रशिक्षण पर जोर दिया।

प्रो0 राजेश बजाज, राहुल मित्तल, पंकज शर्मा, हनी शाह, विपुल प्रताप, भरत बांगा, डा0 रचिता श्रीवास्तव रॉय, भावना मदान, विजय सिंघल, शिवानी सोलंकी, देवेंद्र, कुलदीप, सचिन आदि ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

– राहुल मित्तल

Happy Birthday to Tecnia & Chairman

Tecnia Celebrates its Foundation Day

Mr. R.K. Gupta, Chairman Tecnia Group Speaking at 5th Sept

Charming youngsters of Tecnia Group of Institutions gripped the audience at the Grand Auditorium of Tecnia Institute of Advanced Studies to mark its 13th Foundation Day and mark celebrations of Teacher's Day which, began with presentation of Saraswati Vandana & Lighting of Inaugural Lamp by Chairman Mr. Ram Kailash Gupta, his wife Mrs. Kusum Gupta, Dr. Nirmal Singh, Dr. Ajay Rathore, Director & other institutional heads of the Group.

A variety of programs like *Punjabi Bhangra, Gidda, Bollywood Mix, Classical Singing,Drama* & Poetries recitation were presented by Students and Staff members of Tecnia Group of Institutions, function reflected a mixture between traditional & modernized form of culture. Students of BJMC & BBA Program presented traditional program of Gidda & Punjabi Bhangra . Sachin of BJMC performed a solo dance which enthralled the audience.

Lighting of lamp by Mr. R.K. Gupta, Chairman Tecnia Group with Faculty Members

It was an important day in the history of Tecnia as on this Day Tecnia was founded by its Chairman Mr. R.K Gupta. Mrs. Kusum Gupta, was also present during Tecnia Groups of Institution Celebrations which Co-incidentally also falls on the eve of birthday of the Chairman. Addressing the Function as Chief Guest, Chairman, Mr. R.K. Gupta reiterated his commitment to work hard with dedicated faculty and staff members in field of Education from K.G. to P.G. level. Specially challenged students would be provided free of cost education by the Tecnia Group of Institutions. Later, he felicitated the teachers with Best Faculty, Best Mentor and Best Promising Faculty awards and the other officials of Institute for their outstanding performance in building up the Institute and Nation as a whole.

Felicitation of Mr. R.K. Gupta, Chairman Tecnia Group by Faculty Members

Shivani Solanki

डा.राधाकृष्णन

– भारतीय दर्शन के व्याख्याता

भारत में समय–समय पर महान विभूतियों का जन्म होता रहा है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से समाज तथा देश नाम रोशन किया। ऐसे ही महापुरुषों में से एक डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हैं जो बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के साथ–साथ महान शिक्षक भी थे, इसीलिए उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

डा. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को चेन्नई से लगभग 80 किलोमीटर दूर चित्तूर जिले के तिरूतानी शहर के एक छोटे से सीान प्रागानाडू में हुआ था। पिता की प्रेरणा और माता के प्यार से राधाकृष्णन की बचपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति गहरी दिलचस्पी होने लगी थी। इनके पिता वीरस्वामी एक आदर्श शिक्षकस्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और उसी वर्ष उनकी नियुक्ति मद्रास के ही प्रेसीडेंयी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर हुई। उनकी योग्यता और अध्ययनकुशलता के कारण 1918 में उन्हें तीस वर्ष की आयु में ही मैसूर विश्वविद्यालय के आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति आशुतोष मुखर्जी के निमंत्रण पर मैसूर में किंग जार्ज में प्रोफेसरशिप इन मेंटल एंड मॉरल फिलॉस्फी के पद पर नियुक्त किया गया।

1926 में विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में आयोजित दर्शन कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वंहा जावेट, हास्कल आदि व्याख्यानमालाओं में भारतीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के संबंध में नवीन व्याख्याएं प्रस्तुत कर विदेशी वैज्ञानिकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन की संस्तुति पर उन्हें 1931 में नाईट की उपाधि प्रदान की गई।

एक उत्कृष्ट वक्ता के साथ–साथ डाराधाकृष्णन उच्चकोटि के लब्ध–प्रतिष्ठ लेखक एवं कुशाग्र बुद्धि के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने एथिक्स एंड वेदांत एंड माई फिजिकल प्रोसपोसेशंस, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान की आवश्यकताएं, उपनिषदों का दर्शन, जीवन की हिंदू धारणा, जीवन की आदर्श धारणा, श्रीभागवद गीता, स्वतंत्रता और संस्कृति, विश्वास का पाना, महान भारतीय, ब्रह्मसूत्र और सत्य की खोज आदि अनेक पुस्तकें लिखीं।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 में प्रोफेसर ऑफ ईस्टर्न रिलीजन्स एंड एथिक्स के पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय होने का गर्व उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने 1937 में आंध्र विश्वविद्यालय का और उसके बाद अगस्त 1939 से 1948 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को सुशोभित किया। इसी वर्ष उन्हें यूनेस्को के अधिशासी मंडल का अध्यक्ष चुना गया और भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष भी नियुक्त किया।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1909 में मद्रास विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में उन्हें संविधान सभा का सदस्य बनाया गया। अपने प्रथम भाषण में उन्होंने स्वराज्य शब्द की दार्शनिक व्याख्या की। डा. राधाकृष्णन को भारत सरकार ने 1949 में सोवियत संघ में राजदूत नियुक्त किया। वहां पर उन्होंने भारत–सोवियत मैत्री की सुदृढ़ आधारशिला रखी। 1952 में भारतीय गणतंत्र का प्रथम उपराष्ट्रपति चुना गया। 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया। 13 मई 1962 को इस महान शिक्षाविद् एवं दार्शनिक ने भारत के द्वितीय राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया। जुलाई 1962 में उन्हें ब्रिटिश एकेडमी की ऑनरेरी फेलोशिप प्रदान की गई। डा. राधाकृष्णन की तुलना डा. बर्टेन्ड रसल, जी. ई. भूरे एवं कार्ल जास्पर्स जैसे विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों में की जाती है। शिक्षण और शिष्य उन्हें सबसे ज्यादा प्यारे थे। जिसने भी उनसे शिक्षा ली वे आज भी शिक्षक के रूप में उन्हें सम्मान से याद करते हैं।

एक दार्शनिक होने के कारण डा. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन में धार्मिक, नैतिक एवं लोक कल्याणकारी विचारों का सामंजस्य, भारतीय संस्कृति के प्रति उदारभाव तथा विश्व बंधुत्व की भावना की प्रमुखता है। उनका उद्देश्य समाज को ऐसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित रूप में विकसित करना चाहते थे, जिससे प्रत्येक मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार देश के विकास में योगदान का पूरा अवसर मिले। उनका मानना था कि मनुष्य के विचारों को श्रेष्ठ बनाने के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और शिक्षा से शिष्ट, चरित्रवान तथा स्वावलंबी नागरिक तैयार होते हैं। उनकी राय में संसार के सभी मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं। इसलिए हमें एक दूसरे की सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूरा करने के बाद वे मद्रास में रहकर दर्शनशास्त्र के अध्ययन–अनुशीलन में तल्लीन हो गए। 6 अप्रैल, 1975 को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और डाक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद उनका 16 अप्रैल 1976 को उनका स्वर्गवास हो गया।

– राहुल मित्तल

Significance of Library Automation

The present article gives the importance of library automation, which helps librarians for excellent control over collection. New technologies library provides several new materials, media and mode of storing and communicating the information. Automation requires planning, designing, and implementation. Library automation reduces the manual efforts in library routine by use of library automation collection, Storage, administration, processing, preservation and communication etc. Apart from this such automated environment not only save time of staff's but of clients/users too. Indirectly we are following the laws of library sciences as given by Dr. S R Ranganathans, the Father of Library Science in India. Advanced calculation hardware mean, Computer has gained its importance in every field of human activity because of its speed, Accuracy and capability of large scale processing. It is space saving device as well because information stored on computer readable devices Library automation reduces the drudgery of repeated manual efforts in

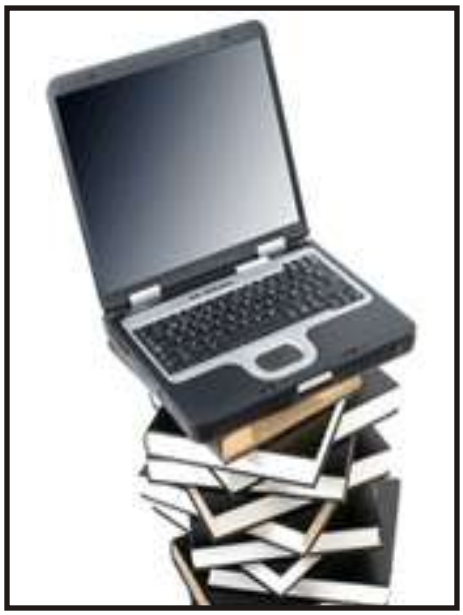

library routine by use of library automation collection, Storage, administration, processing, preservation and communication etc. Library Automation is the general term for information and communication technologies (ICT) that are used to replace manual /traditional systems in the library.

Why we need Library automation !

There are various reasons for automation:

- ☞ Accuracy and promptness
- ☞ Greater efficiency.
- ☞ Information / Knowledge Explosion (Growth of documents)
- ☞ Lack of space.
- ☞ New techniques.
- ☞ To avoid the duplication of work.
- ☞ To improve the control over collection.
- ☞ Resource Sharing
- ☞ Save the time of the reader & Staff.

Automation requires planning, designing, and implementation. Planning involves identification of the activities to be automated, assessment of the volumes of information to be handled, selection of software, selection of compatible hardware systems, training and retraining of the library staff and educating users.

Planning for library Automation

- ☞ Needs mapping
- ☞ Best possible package
- ☞ Staff involvement
- ☞ Budget (Purchase, Operation, Maintenance etc)
- ☞ Hardware requirement (Client /Server, Printer etc)
- ☞ Platform (Operating system)
- ☞ User awareness
- ☞ Maintenance

Basic requirements for the Automation of libraries are:

1. Adequate selection of Library software.
2. Computer hardware.
3. Financial assistance.
4. Maintenance of development.
5. Training of the Human ware/staff.

Library Administration & Advancement through Automation

There are several advantages of library Automation a machine readable catalogue prepared at the time of acquisition may be required respectively for number of purposes. Automation has the following advantages.

1. Productivity increment in terms of works as well as in service.
2. Professional staff need not spend much time to do the routine library work.
3. Eliminates human errors while performing routine library work.
4. Improved Computer awareness among users.
5. Cataloguing is faster, instant access to non-records.
6. Excellent control over circulation.

For the successful implementation of an Automated integrated library system all key factors must be in place support from administration, staff, competence, consideration of user requirements, presence of infrastructure, (Hardware, Software, networks & Human ware) available data, excellent managerial skill from the coordinator of the project. Time is also one of the greatest factor of automation. Initially it takes time to automate the library, later on it will save lot of time of the readers as well as of staff.

Hirdyesh Kumar

Teaching : An Art or a Profession

All education systems try to engage students in acquiring information and knowledge that give them understanding of the self and the real life issues. Learning is not confined to classrooms, but it can also be acquired through distance education and personal experience outside the classroom. The essence of learning is listening and the essence of teaching is telling.

Present day teaching is far more participatory. Teachers are required to talk, observe, watch, reflect with the students and go on peeling off layers upon layers of complexity of subject under discussion. Teaching material and its content, promote active learning, reflective thinking and provide knowledge which will be supportive of the culture in which we live in. This makes teaching more complex, most challenging and most demanding. Teachers must be involved in debate, deliberation and decision about what and how to teach. It carries an implicit conception of teaching as an art and a profession.

Every art, whether it is teaching, stone carving or judicial function in a court, has rules. But mere knowledge of the rules does not make one an artist. Art arises as the knower of the rules learns to apply them appropriately to the particular case of subject. Application, in turn, requires acute awareness of the particularities of the case and ways in which rule can be modified to fit the case without complete abrogation of the rule. We can say that rules of teaching include rules for planning instruction, for making material, for designing tests, for managing classroom, for analyzing subjects, for conducting lectures and discussion.

There is increased emphasis on the importance of fostering the combining of theory and practice. The continued and glowing interest is shown between theory and practice, between idea and experience, between the normative ideals and achievable reals.

Today learning for students has become far more active, reflective and collaborative. Students learn more, what they have learned more deeply and develop the capacity to use what they have learned in the service of the community.

There is a kind of authentic interdependence, between the teacher and the student. There are two types of teachers. One has 20 years of experience, the other has one year of experience 20 times. There is a large difference between learning from experience and simply having experience. Many teachers have experience. It takes special teachers working under special circumstance to learn from that experience. Good teachers have the wisdom of practice.

Operationally we require a combination of improved human resources for the teaching profession and considerable improvement in the condition of teaching. There is no doubt that teaching is a more satisfying, stimulating and rewarding career, a professional rather than a form of technically sophisticated work. It is a social service.

Best Teacher Award

Smt. Manisha Dubey, Emp. No.1454 got the State Award for Best teacher on 05.09.2011 from Smt. Sheila Dixit, Chief Minister, Delhi & Sh. Arvinder Singh Lovely, Education Minister, Delhi. She is teaching Middle and Secondary classes since her joining i.e.15.07.1991.

Believe in Yourself

(There will be challenges to face and changes to make in your life.)

"It is the decisions you make, when you have no time to make them, that define who you are"

Believing in yourself is one of the first steps to success.

1. **Set goals**
2. **Recognize when you achieve your goals, so that you will build your confidence.**
3. **Consider reasons you fail.**
4. **Use realistic expectations to judge your success.**
5. **Listen to critics, but never let them convince you that you are less than you are.**
6. **Give your time and energy to others.**
7. **Don't give up on your dreams, goals or aspirations for you never know how right they truly are until you put them into action.**
8. **Believing in yourself is the key to success in life.**
9. **Don't let people knock you down. If anything, let them get knocked down to prove you can be better.**
10. **If someone says you can't do anything, don't believe them, because it could lead to a critical matter.**
11. **You have to do what you want because there's no one who can stand in your place.**
12. **You have to know that you are so much better than what they say.**

Alka Batra

अंग्रेज़ी भी जाने, पर हिंदी का सम्मान भी करें

हिंदी दिवस पर विशेष

संचार के शुरूआती दौर से ही भाषा ने आधारभूत तत्व के रूप में काम किया। अपने प्रारंभिक काल से ही भाषा दो समुदायों, समाजों, वर्गों, व्यक्तियों और संस्कृतियों को जोड़ने का माध्यम बनी। भाषा का प्रारंभिक स्वरूप केवल आपसी विचारों के आदान प्रदान तक ही सीमित था लेकिन आज इसकी प्रकृति आर्थिक पहलुओं को भी छूती नज़र आती है। आज भाषा केवल बातचीत का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बोलने वाले के व्यक्तित्व की भी पहचान कराती है। कुल मिलाकर बात यह है कि आज वैश्वीकरण के युग में अंग्रेज़ी भाषा को केवल एक भाषा समझना बड़ी भूल होगी। बल्कि आज तो यह इंटरनेशनल पहचान की भाषा बन चुकी है। सारी दुनिया में अंग्रेज़ी एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। अंग्रेजी भारत में कभी उच्च वर्ग का स्टेटस सिंबल हुआ करती थी, लेकिन अब यह रोजगार पाने व आजीविका कमाने का एक प्रमुख माध्यम बनी हुई है। लाखों भारतीय युवाओं को अंग्रेजी में उम्मीद नज़र आने लगी है। आज का युवा इस बात को बेहतर तरीके से जान गया है कि इस कॉरपोरेट जगत में यदि नौकरी को बचाना और प्रतियोगिता में अपने को बनाए रखना है तो इंगलिश को सीखना ही होगा। हालांकि इसका एक दूसरा पक्ष भी है।

जैसे जैसे भारतीय मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई वैसे वैसे उनकी अगली पीढ़ी ने अंग्रेज़ी कान्वेंट स्कूलों में प्रवेश पाया। इससे उसकी भाषाई नींव अंग्रेज़ी के रूप में स्थापित हुई, और समय के साथ उनका हिंदी के प्रति उपेक्षित भाव पैदा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ की हमारे आसपास की भाषा ही हमारे बच्चों के लिए समस्या बन गई। चूंकि अंग्रेज़ी को सीखना हिंदी की तुलना में कहीं अधिक सहज व सरल है। इस कारण भी युवाओं का इस और झुकाव हुआ। इसके साथ ही उच्च पदों पर बैठे अधिकारियों, राजनीतिज्ञों व उदयोगपतियों की संतानें तो विदेशी शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। ऐसे में इस प्रकार का चलन हो गया है कि भारत में ऊंचे ओहदे पर बैठे लोगों का भारत की शिक्षण संस्थाओं से मोह भंग हो गया है और अब सब इसी कोशिश में लगे रहते है।

वर्तमान समय में अंग्रेज़ी की आवश्यकता को देखते हुए इंगलिश सिखाने वाले संस्थानों की भूमिका भी व्यापक हो गई है। भारत में अंग्रेज़ी सिखाने वाले सैंकड़ों संस्थानों का जन्म हुआ है। हजारों की संख्या में स्टूडेंटस इन संस्थानों में अंग्रेज़ी सीखते हैं। 1990 के दशक में उदारीकरण के दौर की शुरूआत होते ही दुनिया एक वैश्विक ग्राम में बदली, और आपसी संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेज़ी ने अपने नाम का परचम लहराया। विदेशी कंपनियां अंग्रेजी बोलने वाले युवाओं को अच्छी नौकरी देने लगी। हिंदी भाषाई क्षेत्र के छात्र इस दौर में पिछड़ने लगे। इसका एक पक्ष यह भी है कि अंग्रेज़ी आर्थिक रूप से मजबूत बनने का एक ज़रिया भी बनती जा रही है। भारत में कार्यरत प्रायः सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी अनिवार्य है। चूंकि इन एमएनसी का हिस्सा बनकर अपने को आर्थिक रूप से मजबूत बनाया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर एमबीए जैसे कोर्सेस की बढ़ती मांग के कारण भी इस भाषा की वर्चस्वता को देखा जा सकता है।

अंग्रेज़ी भाषा की इस वर्चस्वता को कुछ विद्वानों ने नकारात्मक रूप में भी समझाने का प्रयास किया है। वे इसे अमरीकी सांस्कृतिक वर्चस्वता का एक उपकरण मानते है। ग्रामशी जैसे राजनीतिक चिंतक ने अपनी पुस्तक द प्रिंस में इस ओर संकेत किया था। अमरीकी नीतियों के विरोधियों विशेषकर साम्यवादी सोच रखने वाले विचारों व राजनीतिक चिंतकों का मानना है कि अंग्रेज़ी को जरूरत से ज्यादा महत्व देकर हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। हालांकि हम इस राजनीतिक विवाद में नहीं पड़ेंगे। शायद ये विचारक अपनी जगह सही हो। लेकिन हमें आज की आर्थिक आवश्यकताओं को भी जानना होगा। 2020 तक भारत को विश्व शक्ति के रूप में स्थापित करने का विज़न जो हम लेकर चल रहे है उसकी राह में इस तरह की सोच बाधक बन सकती है। आज इंटरनेशनल स्तर पर सैन्य और राजनीतिक शक्तियों का प्रभाव आर्थिक शक्ति के सामने बौना नज़र आता है। जापान जैसा छोटा देश केवल आर्थिक विकास के कारण ही विश्व की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इसलिए भारत को जानना होगा कि वैश्वीकरण की शुरूआत के साथ ही विदेशी देशों से आर्थिक संबंध स्थापित करना आसान हो गया है। ऐसे में अंग्रेज़ी की महत्ता स्वयं ही सिद्ध हो जाती है।

अतः हमें किसी भी प्रकार के राजनीतिक विवादों से परे रहकर इस बात को समझना होगा कि अंग्रेज़ी भारत के विकास का एक तत्व है। बिना इसके हमारी दुनिया का आकार सीमित हो जाएगा। प्राय अंग्रेज़ी ना जानने वाले लोग कहते है कि वे भारतवासी हैं, और केवल भारत की भाषा को ही बोलेंगे। लेकिन इसमें उनकी इस भाषा को ना सीखने की कमी दिखाई देती है। अतः इस कमी को दूर करने के लिए वे इस तरह की कथित देशभक्ति को सिद्ध करने वाले वाक्यों का प्रयोग करते हैं। यह सही है कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमें उसका सम्मान और आदर करना चाहिए। हम यह नहीं कहते कि हिंदी को उपेक्षित किया जाए। इसकी अपनी अलग संस्कृति है। लेकिन भूमंडलीकरण के युग में जिस तरह संस्कृतियों का आमेलन हो रहा है उसको देखते हुए हमें अन्य संस्कृतियों के साथ सामंजस्य बिठाना होगा और इसके लिए दूसरी भाषाओं को भी सम्मान देना होगा। अतः यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हम अंग्रेज़ी जानते हैं लेकिन हम प्रयोग हिंदी का करेंगे।

– पंकज शर्मा 'नवीन'

Start where you stand.....

Start where you stand and never mind for the past,
The past won't help you in beginning new,
If you have left it all behind at last
Why, that's enough, you're done with it, you're through;
This is another chapter in the book,
This is the another race you have planned,
Don't give the vanished days a backward look,
Start where you stand.
The world won't care about your old defeats
If you can start a new and win success;

The future is your time, and time is feet
And there is much of work and strain and stress;

Forget the ferried woes and dead despairs,
Here is a brand - new trial right at hand,
The future is for him, who does and dares,
Start where you stand.
Old failures will not halt, old triumphs aid,
Today's the thing, tomorrow soon will be;
Get in the fight and face it unafraid,
And leave the past to ancient history,

What has been, has been; yesterday is dead
And by it you are neither blessed nor banned
Take courage, be brave and drive ahead,
start where you stand.

Upma Gupta

This Month

September 25, 1513 - Spanish explorer Vasco Nunez de Balboa first sighted the Pacific Ocean after crossing the Isthmus of Panama.

September 8, 1565 - The first Catholic settlement in America was founded by Spaniard Don Pedro Menendez de Aviles at St. Augustine, Florida.

September 28, 1542 - California was discovered by Portuguese navigator Juan Rodriguez Cabrillo upon his arrival at San Diego Bay.

September 4, 1609 - The island of Manhattan was discovered by navigator Henry Hudson.

September 16, 1620 - The *Mayflower* ship departed from England, bound for America with 102 passengers and a small crew. The ship weathered dangerous Atlantic storms and reached Provincetown, Massachusetts on November 21st. The Pilgrims disembarked at Plymouth on December 26th.

September 2, 1666 - The Great Fire of London began in a bakery in Pudding Lane near the Tower. Over the next three days more than 13,000 houses were destroyed, although only six lives were believed lost.

September 19, 1676 - Jamestown, Virginia, was attacked and burned during a rebellion led by Nathaniel Bacon against the Royal Governor, Sir William Berkeley.

Compilation: Vipul Partap

MY BEST FRIEND

I may not be the perfect friend for you,
I even may not be your good friend,
But one thing I assure u that,
my love, my trust, my friendship will never finish even after my end.
You are like a talking picture,
with whom in my lonely times I interact,
whenever I had something to say things,
which I feel are awkward to say in real act.
I am sorry for the times I irritated u,
U know it has sometimes been my duty,
Please 4giv me 4 all my mistakes,
Coz I don't want to lose a diamond of my life whose name is Suki.
This is the God's grace 2 me,
That I got a friend like u,
please don't leave me alone ever,
coz in every phase of life I need u.

My friendship 4 u is a lifetime promise,
of not leaving ur hand till the end,
I'll always be there 4 u,
coz u r my bestest friend…
A big thanx for being my friend!

HAPPY BIRTHDAY TO YOU!

-Sushant Agarwal

Basics of Media

Intercom: Short for intercommunication system. Used by all production and technical personnel. The most widely used system has telephone headsets to facilitate voice communication on several wired or wireless channels. Includes other systems, such as I.F.B. and cell phones.

Lighting: The manipulation of light and shadows: to provide the camera with adequate illumination for technically acceptable pictures; to tell us what the objects on-screen actually look like; and to establish the general mood of the event.

Line monitor: The monitor that shows only the line-out pictures that go on the air or on videotape. Also called master monitor or program monitor.

Line-Out: The line that carries the final video or audio output for broadcast.

Log: The major operational document: a second-by-second list of every program aired on a particular day. It carries such information as program source or origin, scheduled program time, program duration, video and audio information, code identification (house number, for example), program title, program type, and additional pertinent information.

Master Control: Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material

Compilation: Rahul Mittal & Bharat Banga

How can I Pass?

It is not my fault that I fail because the year has only 365 days typical academic year for a student:

- Sundays in year 52, these are rest day so a student should not study, balance 313 days.
- Summer holidays 52, where students are busy doing summer holiday home work, so not study, balance 261 days.
- 8 hours sleep daily means 122 days, balance 139 days.
- 1 hour daily for playing means 15 days, balance 124 days.
- 1 hour daily for chewing means 15 days, balance 109 days.
- 1 hour daily for chatting means 15 days, balance 94 days.
- Exam days for year at least 40 days, balance 53 days.
- Quarterly, half yearly & festival holidays 50 days, balance 3 days.
- For sickness 1 day, balance 2 days.
- Functions, marriages 1 day, balance 1 day.
- That 1 day is my birthday.

How can I pass?????

Vol. 7 **No.** 9
L/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

Alphabets of success

A - Always Respect your Superiors.
B - Be confident.
C - Consider the foot prints of great men.
D - Do not brood over past because it will make you destroyed.
E - Endure Hardship Patiently.
F - Fight courageously with faith.
G - Go on doing your duties without looking back.
H - Honestly try to see things from other points of view.
I - Injure not the heart of others.
J - Join the company of noble ones.
K - Keep your heart clean & free.
L - Let your mind be good.
M - Mould yourself with time.
N - Never try to harm others.
O - Observes good manners in all circumstances & societies.
P - Past should be a guide to avoid similar mistake in future.
Q - Question yourself thrice before blaming somebody.
R - Reason must guide you.
S - Sympathies with others at the time of adversity.
T - Tackle every problem coolely.
U - Use your leisure for self governance.
V - Venture not the threshold of wrongs.
W - Work simultaneously & efficiently to gain results.
X - Exercise your brain and good result will come to you.
Y - Your confidence & self determination counts.
Z - Zoom on ladder of success if you follow these points.

Pawan Chaudahary

IMPORTANT QUOTES

"Never Play With The Feelings Of Others Because You May Win The Game But The Risk Is That You Will Surely Lose The Person For A Life Time".
- Shakespeare

"The world suffers a lot. Not because of the violence of bad people, But because of the silence of good people!"
- Napoleon

"I am thankful to all those who said NO to me It's because of them I did it myself.."
- Einstein

"If friendship is your weakest point then you are the strongest person in the world"
- Abraham Lincoln

"Laughing Faces Do Not Mean That There Is Absence Of Sorrow! But It Means That They Have The Ability To Deal With It".
- Shakespeare

"Opportunities Are Like Sunrises, If You Wait Too Long You Can Miss Them".
- William Arthur

"When You Are In The Light, Everything Follows You, But When You Enter Into The Dark, Even Your Own Shadow Doesn't Follow You."
- Hitler

Winners V/s Losers

Part-2

The Winner says, "It may be difficult but it is possible"; the
Loser says, "It may be possible but it is too difficult."

When a Winner makes a mistake, he says, " I was wrong";
when a Loser makes a mistake, he says, "It wasn't my fault."

A Winner makes commitments; a Loser makes promises.

Winners have dreams; losers have schemes.

Winners say, "I must do something"; losers say, "Something must be done."

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster.tecnia@gmail.com